International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(I), July- September, 2025, pp. 75-83

सोशल मीडिया का भविष्य

नीतू सैनी[1*] | डॉ. प्रीति शर्मा[2]

[1]शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
[2]सहायक प्रोफेसर, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: ashoksaini.kdl@yahoo.com

Citation: नीतू सैनी, डॉ. प्रीति शर्मा (2025). सोशल मीडिया का भविष्य. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(I)), 75–83.

सार

21वीं शताब्दी में सोशल मीडिया मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। यह न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि विचार, सूचना, समाचार, मनोरंजन, व्यवसाय, राजनीति, शिक्षा और सामाजिक चेतना को आकार देने वाला एक शक्तिशाली उपकरण भी बन गया है। फेसबुक, ट्विटर (अब एक्स), इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप, यूट्यूब, लिंक्डइन आदि जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स ने वैश्विक समाज को एक डिजिटल मंच पर जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज सोशल मीडिया का प्रभाव व्यक्तिगत से लेकर वैश्विक स्तर तक महसूस किया जा रहा है। भविष्य में सोशल मीडिया केवल एक संवाद माध्यम नहीं, बल्कि एक समग्र डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में विकसित होने जा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), मशीन लर्निंग, संवर्धित वास्तविकता (AR), वर्चुअल रियलिटी (VR) और मेटावर्स जैसे तकनीकी नवाचार सोशल मीडिया को एक नए स्वरूप में ढाल रहे हैं। अब उपयोगकर्ता केवल सामग्री को देख या साझा ही नहीं करेगा, बल्कि उसके साथ आभासी रूप से अनुभव करेगा। सोशल मीडिया का भविष्य व्यक्तिगत अनुभवों के अनुकूलन, डेटा–सुरक्षा की चुनौती, फेक न्यूज़ पर नियंत्रण, डिजिटल नागरिकता के अधिकार, और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों से गहराई से जुड़ा रहेगा। आने वाले समय में "सोशल मीडिया एथिक्स" और "डिजिटल वेलबीइंग" जैसे विषय केंद्र में होंगे। कंपनियाँ अब यूज़र सेंट्रिक और ट्रांसपेरेंट एल्गोरिद्म विकसित कर रही हैं ताकि उपयोगकर्ता को विश्वसनीय और संतुलित सामग्री प्रदान की जा सके। साथ ही, सोशल मीडिया का उपयोग व्यापारिक अवसरों, व्यक्तिगत ब्रांडिंग, शिक्षा, ई–गवर्नेंस और जन–जागरूकता अभियानों में और अधिक व्यापक होगा। भारत जैसे विकासशील देशों में सोशल मीडिया ग्रामीण आवाज़ों को भी एक मंच प्रदान करेगा, जिससे डिजिटल लोकतंत्र को बल मिलेगा। हालांकि, गोपनीयता का उल्लंघन, निगरानी संस्कृति, राजनीतिक ध्रुवीकरण, ऑनलाइन शोषण और डिजिटल असमानता जैसी चुनौतियाँ भी बनी रहेंगी। अतः सोशल मीडिया के भविष्य को सुरक्षित, नैतिक और समावेशी बनाने हेतु वैश्विक सहयोग, कड़े साइबर कानून और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना आवश्यक होगा। अतः, सोशल मीडिया का भविष्य तकनीकी, सामाजिक, और नैतिक आयामों से परिपूर्ण होगा, जो मानव जीवन को और अधिक गहराई से प्रभावित करेगा।

***शब्दकोशः** सोशल मीडिया, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मेटावर्स, डिजिटल साक्षरता, डेटा सुरक्षा, फेक न्यूज़, डिजिटल नागरिकता, संवर्धित वास्तविकता, वर्चुअल रियलिटी, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक प्रभाव।*

[*] Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.

प्रस्तावना

वर्तमान युग डिजिटल क्रांति का युग है, जिसमें सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है। इस क्रांति की सबसे प्रभावशाली उपज सोशल मीडिया है। सोशल मीडिया ने संवाद के पारंपरिक स्वरूप को पूरी तरह से बदल दिया है। जहां पहले संप्रेषण की प्रक्रिया एकपक्षीय और सीमित थी, वहीं अब यह बहुपक्षीय, त्वरित और वैश्विक हो गई है। आज *Facebook, Instagram, Twitter (X) WhatsApp, YouTube, Snapchat, LinkedIn* जैसे प्लेटफार्म्स ने लोगों के जीवन में गहरी पैठ बना ली है।

सोशल मीडिया न केवल व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का साधन बन गया है, लेकिन यह राजनीतिक, शैक्षिक, सामाजिक और व्यावसायिक दायित्वों का भी पूर्ण स्रोत बन गया है। यह एक ऐसा प्लेटफार्म बन गया है जहां व्यक्ति अपने विचारों को साझा करता है, जानकारी प्राप्त करता है और वैश्विक समुदाय के साथ जुड़ता है।

दोस्तों, आज के समय में सोशल मीडिया का उपयोग मनोरंजन या संवाद के लिए नहीं हो रहा, बल्कि यह जन–जागरूकता अभियानों, चुनाव प्रचार, शिक्षा, डिजिटल मार्केटिंग, और सामाजिक आंदोलनों तक में निर्णायक भूमिका निभा रहा है। इसके साथ ही इसी के दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं – जैसे गलत सूचना का प्रसार, साइबर बुलिंग, गोपनीयता का हनन, मानसिक तनाव आदि।

इस बैकग्राउंड में यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम सोशल मीडिया की वर्तमान भूमिका का न्यायपूर्ण विश्लेषण करते हुए उसके भविष्य का प्रयास करें। यह जानना अत्यावश्यक है कि बदलते डिजिटल वातावरण के बीच सोशल मीडिया किस दिशा में अग्रसर है और वह समाज के किस रूप को आकार दे रहा है। इस शोध का प्रमुख उद्देश्य यही है कि सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं का मूल्यांकन करते हुए उसके भविष्य के संभावित रूप को समझा जा सके।

विषय की पृष्ठभूमि

सूचना और संचार तकनीक के क्षेत्र में हुए तेज़ विकास ने मानव समाज को डिजिटल युग में प्रवेश कराया है। इस डिजिटल क्रांति का सबसे सशक्त उपकरण सोशल मीडिया है, जिसने पारंपरिक मीडिया की सीमाओं को तोड़ते हुए संवाद, सूचना और विचारों के आदान–प्रदान को लोकतांत्रिक बनाया है।

सोशल मीडिया ने भारत जैसे दुर्विविधतापूर्ण देश में भी अभूतपूर्व लोकप्रियता प्राप्त की है। शहरों से ग्रामीण क्षेत्रों तक, युवा से वरिष्ठ नागरिकों तक, सोशल मीडिया ने एक समान पहुंच का निर्माण किया है। एक रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2024 में भारत में सोशल मीडिया उपयोगकर्ता की संख्या 80 करोड़ से अधिक हो गई है, जिससे भारत को विश्व का सबसे बड़ा डिजिटल उपभोक्ता राष्ट्रों में शामिल किया जाता है।

पिछले दशक में सोशल मीडिया केवल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म नहीं रहा, बल्कि यह सूचना, जनमत निर्माण, प्रचार–प्रसार, सामाजिक न्याय और डिजिटल नागरिकता का माध्यम बन चुका है। कई सामाजिक आंदोलनों जैसे *MeToo, Black Lives Matter*, या भारत में *Farmers Protest* को वैश्विक स्तर पर प्रचारित करने में सोशल मीडिया की बड़ी भूमिका रही है।

हालांकि, सोशल मीडिया के अंधाधुंध उपयोग से कई समस्याएँ भी उत्पन्न हो रही हैं – जैसे फेक न्यूज़, गोपनीयता का उल्लंघन, डिजिटल व्यसन, और सामाजिक अलगाव। इसलिए यह जानना आवश्यक है कि आने वाले वर्षों में सोशल मीडिया किस दिशा में आगे बढ़ेगा – क्या यह मानवता को अधिक सशक्त बनाएगा या उसकी निजीता, मानसिक शांति और सामाजिक संरचना को और जटिल बना देगा?

इन्हीं प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए इस अध्ययन में सोशल मीडिया के भविष्य की पड़ताल की जा रही है।

सामाजिक प्रासंगिकता

- युवा पीढ़ी का बहुत ज्यादा जुड़ाव सोशल मीडिया से।
- सूचना का तेजी से और व्यापक फैलाव।
- सामाजिक हाल–चाल और जनजागरण में योगदान।
- राजनीतिक चर्चा और जनमानस निर्माण का सशक्त साधन।
- डिजिटल शिक्षा और व्यवसाय में बढ़ती भूमिका।
- सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों, भाषा और संस्कृति पर प्रभाव।
- साइबर अपराधों की बढ़ती घटनाएं।
- सामाजिक संबंधों में दूरी और डिजिटल व्यसन की समस्या।

रिसर्च की आवश्यकता

- सोशल मीडिया के सकारात्मक व नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन।
- डिजिटल नागरिकता की समझ विकसित करना।
- सोशल मीडिया नीति निर्माण हेतु तथ्यात्मक आधार प्रदान करना।
- युवाओं में जिम्मेदार उपयोग की प्रवृत्ति जाग्रत करना।
- सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक संरचना पर सोशल मीडिया के दीर्घकालीन प्रभाव का विश्लेषण।
- तकनीकी परिवर्तन के बीच डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका स्पष्ट करना।

उद्देश्य

- सोशल मीडिया के वर्तमान रूप का विश्लेषण करना।
- सोशल मीडिया के फायदों और नुकसानों की खोज करना।
- उपयोगकर्ताओं के व्यवहार का विश्लेषण करना।
- समाज, संस्कृति और राजनीति पर इसके प्रभाव को समझना।
- भविष्य में सोशल मीडिया की पूर्वानुमान करना।
- डिजिटल नीति निर्माण के लिए सुझाव उपस्थित करना।

अध्ययन की सीमाएँ

- अध्ययन क्षेत्र सीमित भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित है।
- डेटा संग्रह एक विशेष समयावधि तक ही सीमित है।
- कुछ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का ही गहन अध्ययन किया गया है।
- उत्तरदाता की ईमानदारी व स्पष्टता पर निर्भरता।
- तकनीकी परिवर्तनों के कारण निष्कर्ष भविष्य में परिवर्तनीय हो सकते हैं।

समीक्षा साहित्य

सोशल मीडिया पर किए गए पूर्व शोध

- कपलान एवं हेनलिन (2010) ने सोशल मीडिया को एक ऐसे प्लेटफ़ॉर्म को डेस्क्राइब किया है, जहां उपयोगकर्ता व्यक्तिगत सामग्री तैयार करते हैं और उसे साझा करते हैं। उन्होंने सोशल मीडिया के कई रूपों की भी डिफ़ॉरेंसिअलेशन की।

- बॉयड एवं एलिसन (2007) ने सामाजिक नेटवर्किंग साइट्स की डिफ़ॉरेंसिअलेशन दी और यह बताया कि ये साइट्स व्यक्तिगत प्रोफ़ाइल, नेटवर्क बनाना और आपसी संवाद को बढ़ावा देते हैं।
- एलिसन, स्टेनफील्ड एवं लैम्पे (2007) ने अपनी शोध में प्रदर्शित किया है कि सोशल मीडिया व्यक्तिगत और सामाजिक पूंजी के विकास में उपयोगी होता है।
- कीट्जमैन एवं सहयोगी (2011) ने सोशल मीडिया के सात मसमूलभूत घटकों की पहचान की – पहचान, वार्तालाप, साझा करना, उपस्थिति, संबंध, प्रतिष्ठा, और समूह।
- पैरीन (2015) की रिपोर्ट के अनुसार, सोशल मीडिया का उपयोग सभी आयु वर्गों में तेजी से बढ़ रहा है, विशेष रूप से किशोर और युवा वर्ग में।

भारत में सोशल मीडिया उपयोग के रुझान

- आईएएमएआई रिपोर्ट (2023) के अनुसार, भारत में 82 करोड़ से अधिक सोशल मीडिया उपयोगकर्ता हैं, जिनमें सबसे बड़ा हिस्सा 18 से 30 वर्ष की आयु के युवाओं का है।
- कुमार एवं सिंह (2021) ने शोध में देखा कि भारत में व्हाट्सएप, यूट्यूब और इंस्टाग्राम की सबसे ज्यादा होती है, खासकर शहरी इलाकों में।
- जोशी (2020) ने भारत में राजनीतिक प्रचार, जन जागरूकता और सामाजिक आंदोलनों में सोशल मीडिया की भूमिका को हाइलाइट किया।
- मेहता एवं रानी (2022) ने समझाया कि ग्रामीण भारत में भी स्मार्टफोन और इंटरनेट के उपलब्ध होने की वजह से सोशल मीडिया तक पहुंच में समझी बढ़ी है।

वैश्विक दृष्टिकोण में सोशल मीडिया

- ग्लोबल वेब इंडेक्स रिपोर्ट (2023) के अनुसार, दुनिया भर में एक व्यक्ति औसतन दिन में 2.5 घंटे सोशल मीडिया पर बिताता है।
- स्टेटिस्टा रिपोर्ट (2022) में फेसबुक, इंस्टाग्राम, टिकटॉक और यूट्यूब विश्व के सबसे ज्यादा उपयोग किए जाने वाले सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म बताए गए हैं।
- आंद्रेसेन एवं सहयोगी (2012) ने सोशल मीडिया की लत को एक मानसिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में चिन्हित किया, विशेषतः किशोरों में।
- कैस्टेल्स (2009) ने अपने शोध में बताया कि डिजिटल नेटवर्क ने समाज की संरचना को पूरी तरह से बदल दिया है और अब शक्ति केंद्र नेटवर्क बनते जा रहे हैं।

सोशल मीडिया एवं युवा वर्ग

- सुभ्रमण्यम एवं ग्रीनफील्ड (2008) ने युवाओं में सोशल मीडिया के प्रभावों का अनुसंधान किया और यह पाया कि यह आत्म–अभिव्यक्ति और सामाजिक पहचान निर्माण का साधन बन गया है।
- चौधरी एवं शर्मा (2021) ने बताया कि युवा सोशल मीडिया के माध्यम से सामाजिक तुलना करते हैं, जिससे आत्मसम्मान व मनोभाव प्रभावित होते हैं।
- वर्मा (2023) के अनुसार, 15–25 वर्ष के युवाओं द्वारा दैनिक औसतन 4–5 घंटे सोशल मीडिया में बिताए जाते हैं।
- भार्गव एवं जायसवाल (2020) ने सोशल मीडिया और युवा मानसिक स्वास्थ्य के संबंधों का विश्लेषण अपने अध्ययन में किया।

सोशल मीडिया एवं शिक्षा

- टेसे (2013) के अनुसार, सोशल मीडिया शैक्षिक गतिविधियों के रूप में समूह चर्चा, सूचना साझा करना, और ऑनलाइन शिक्षा में सहायक है।
- मिश्रा एवं यादव (2022) ने ढूंढा कि कोविड–19 के बाद सोशल मीडिया का शैक्षिक उपयोग बहुत अधिक बढ़ गया है, विशेषकर ऑनलाइन शिक्षण को लें।
- गुप्ता एवं बंसल (2021) ने परीक्षा में दूंस कि फेसबुक एवं व्हाट्सएप ग्रुप्स किश्टों व शिक्षकों के लिए जानकारी साझा करने और वार्ता का कारगर माध्यम बन गए हैं।
- द्विवेदी एवं सहयोगी (2023) ने उच्च शिक्षा में सोशल मीडिया के प्रभाव को तस्वीर में दिखाते हुए इसे संवाद और सहभागिता का एक नया माध्यम कारित किया।

शोध प्रविधि

शोध की प्रकृति

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं सर्वेक्षण आधारित है। इसका उद्देश्य सोशल मीडिया के वर्तमान उपयोग, उसके प्रभाव और संभावित भविष्य की दिशा का विश्लेषण करना है।

नमूना आकार तथा चयन विधि

इस अध्ययन में कुल 100 प्रतिभागियों को रखा गया है।

- 50 शहरी क्षेत्र से
- 50 ग्रामीण क्षेत्र से

इनमें 18–30 वर्ष के स्टूडेंट्स, युवा पेशेवर और गृहणियाँ शामिल थीं। सुविधा सैंपलिंग तकनीक का इस्तेमाल किया गया।

डेटा संग्रह की विधियाँ

उत्तरदाताओं से जानकारी एक स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से प्राप्त की गई, जिसमें बहुविकल्पीय प्रश्न, हाँ/ना आधारित प्रश्न, तथा एक लघु उत्तर अनुभाग था।

डेटा विश्लेषण की विधियाँ

डेटा का विश्लेषण प्रतिशत विधि (*% method*) से किया गया। किसी भी प्रकार के सांख्यिकीय टूल का प्रयोग नहीं किया गया।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: सोशल मीडिया उपयोग का उद्देश्य

उद्देश्य	उत्तरदाता (%)
संवाद	80%
समाचार/सूचना प्राप्त करना	72%
मनोरंजन	68%
शिक्षा/सीखना	45%
व्यावसायिक नेटवर्किंग	30%

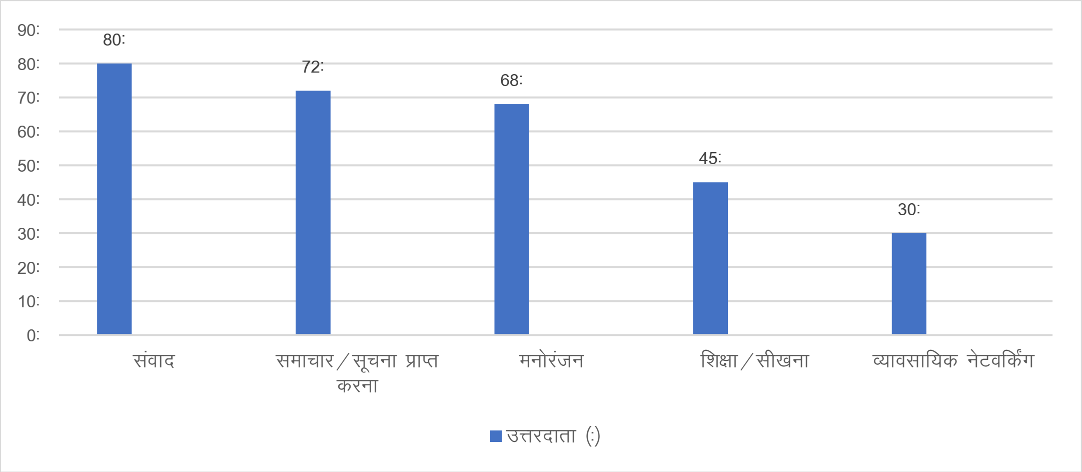

व्याख्या

उत्तरदाताओं में सबसे अधिक 80% लोग सोशल मीडिया का उपयोग संवाद के लिए करते हैं। इसके बाद सूचना व मनोरंजन प्रमुख उद्देश्य हैं। शिक्षा के लिए उपयोग अपेक्षाकृत कम है।

तालिका 2: सोशल मीडिया के प्रभाव – सकारात्मक बनाम नकारात्मक

प्रभाव का प्रकार	उत्तरदाता (%)
सकारात्मक	60%
नकारात्मक	30%
उत्तर नहीं दिया	10%

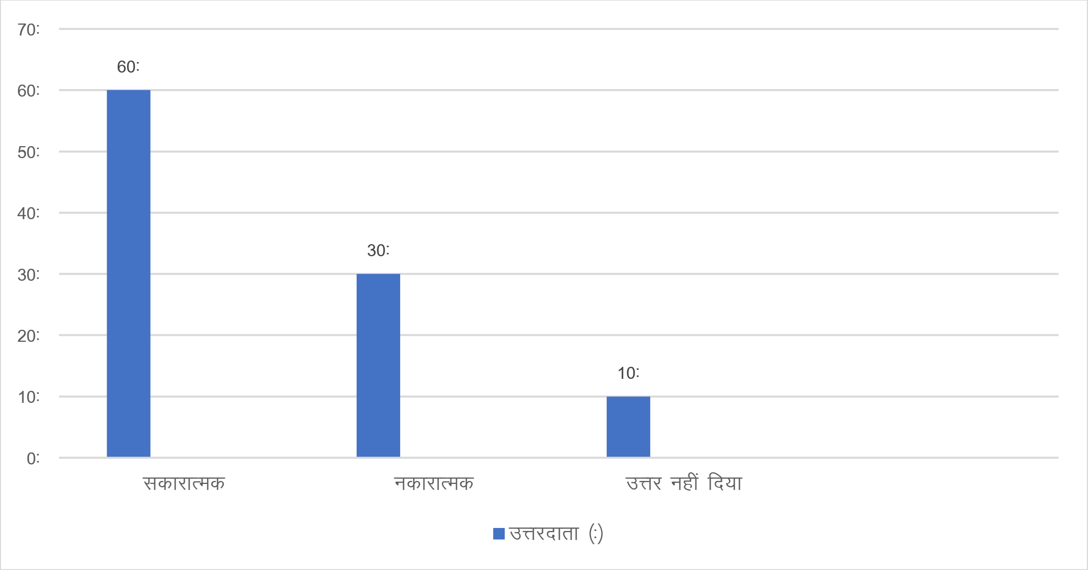

व्याख्या

अधिकांश लोग सोशल मीडिया को सकारात्मक मानते हैं जैसे कि जानकारी, नेटवर्किंग आदि में सहायक। लेकिन 30: उपयोगकर्ता इसके दुष्प्रभाव (जैसे समय की बर्बादी, मानसिक तनाव) को लेकर चिंतित हैं।

तालिका 3: प्रतिदिन सोशल मीडिया पर बिताया गया समय

समय सीमा	उत्तरदाता (%)
1–2 घंटे	25%
2–4 घंटे	40%
4–6 घंटे	20%
6 घंटे से अधिक	15%

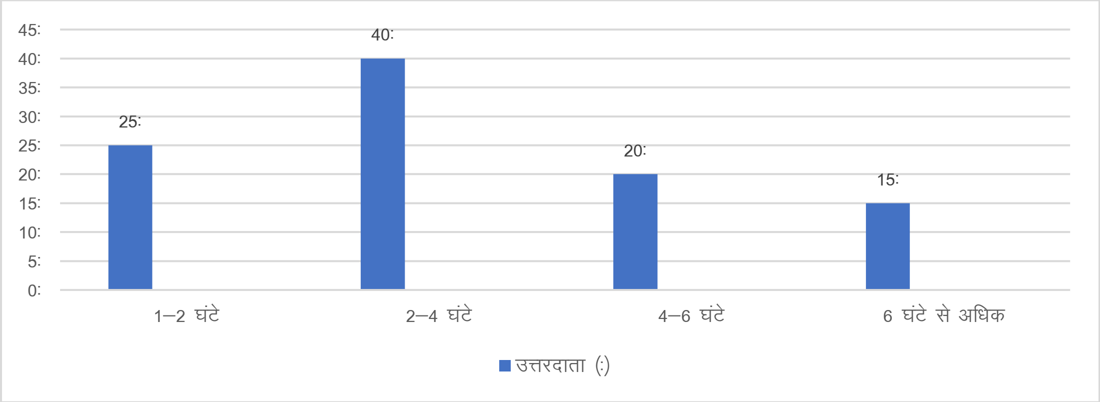

व्याख्या

40% लोग प्रतिदिन 2 से 4 घंटे सोशल मीडिया पर व्यतीत करते हैं। यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया दैनिक जीवन का बड़ा हिस्सा बन गया है।

तालिका 4: क्या सोशल मीडिया मानसिक तनाव का कारण है?

उत्तर	उत्तरदाता (:)
हाँ	42%
नहीं	48%
स्पष्ट नहीं	10%

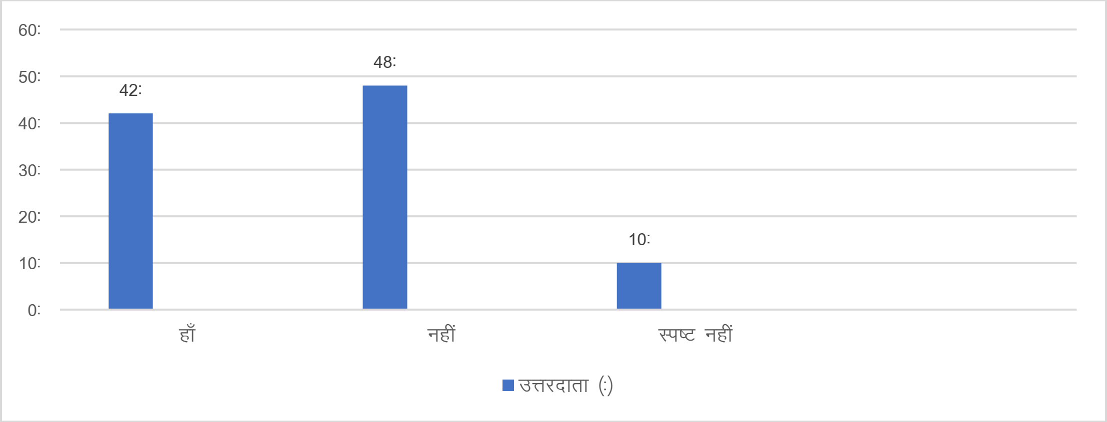

व्याख्या

लगभग 42% लोग मानते हैं कि सोशल मीडिया मानसिक तनाव का कारण बन सकता है, विशेष रूप से तुलना, ट्रेंड दबाव, आदि के कारण।

चर्चा

निष्कर्ष अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया एक अभिन्न अंग के रूप में आज के समाज का हिस्सा बन गया है। संवाद, सूचना और मनोरंजन इसके प्रमुख उपयोग हैं, जितनी बजाय किंतु मानसिक स्वास्थ्य और समय प्रबंधन पर इसके दुष्प्रभाव भी हैं।

सोशल मीडिया का अधिक सकारात्मक उपयोग शहरी क्षेत्रों में देखा गया जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में भी बढ़ता जा रहा है किंतु जागरूकता कम है।

शिक्षा में सोशल मीडिया की भूमिका बढ़ी है, लेकिन यह अधिकतर अनौपचारिक शिक्षण तक ही सीमित है। मानसिक तनाव, सोशल मीडिया की लत, और गोपनीयता की समस्या अब उभरती चुनौतियाँ हैं।

निष्कर्ष

यह अध्ययन यह शंका शिलातारक करता है कि सोशल मीडिया का भविष्य अत्यंत प्रभावशाली है लेकिन इसके प्रभाव दोधारी हैं – लाभदायक भी और हानिकारक भी।

यह सिर्फ मनोरंजन या संवाद का माध्यम न रहकर अब राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में अपनी भूमिका स्थापित कर चुका है।

यह केवल युवा वर्ग का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है, और वे इसकी उपयोगिता से तो प्रभावित हैं परंतु तनाव, सामाजिक अलगाव, और डिजिटल व्यसन के नकारात्मक प्रभाव के बारे में भी सतर्क हो रहे हैं।

अगर सोशल मीडिया का उपयोग में संतुलन और नैतिकता बरता जाए, तो यह एक परिवर्तनकारी उपकरण सिद्व हो सकता है।

मुख्य निष्कर्ष

- ज्यादातर लोग सोशल मीडिया का इस्तेमाल संवाद और जानकारी के लिए करते हैं।
- युवाओं में सोशल मीडिया का इस्तेमाल अत्यधिक मात्रा में है।
- मानसिक तनाव और समय की बर्बादी को लेकर भी चिंताएं सामने आईं।
- शिक्षा में सोशल मीडिया सहायक है, लेकिन अभी भी सीमित रूप में।
- सोशल मीडिया का असर सामाजिक मूल्यों के साथ–साथ संबंधों पर भी हुआ है।

सुझाव

- स्कूल और कॉलेज स्तर पर डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम शुरू किए जाएं।
- मानसिक स्वास्थ्य और सोशल मीडिया पर कार्यशालाएं आयोजित हों।
- सोशल मीडिया के लिए उपयुक्त नीति व नियमावली तैयार की जाए।
- अभिभावकों और शिक्षकों को सोशल मीडिया उपयोग में मार्गदर्शन की भूमिका निभानी चाहिए।
- सोशल मीडिया पर बिताए गए समय को नियंत्रित करने के लिए निजी अनुशासन आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौधरी, संदीप एवं शर्मा, रितु (2021) – "युवा और सोशल मीडिया", युवा अध्ययन शोधपत्र
2. गुप्ता, मनीष एवं बंसल, कंचन (2021) – "ऑनलाइन शिक्षा में सोशल मीडिया की भूमिका", डिजिटल एजुकेशन जर्नल
3. वर्मा, प्रीति (2023) – "सोशल मीडिया और मानसिक स्वास्थ्य", मनोविज्ञान समीक्षा
4. जोशी, सौरभ (2020) – "राजनीति और सोशल मीडिया", सामाजिक दृष्टि पत्रिका

5. मेहता, विशाल एवं रानी, भावना (2022) – "ग्रामीण भारत में सोशल मीडिया", ग्रामीण विकास पत्रिका
6. आईएएमएआई रिपोर्ट (2023) – भारत में डिजिटल उपयोगकर्ता रिपोर्ट
7. मिश्रा, राकेश एवं यादव, पायल (2022) – "कोविड के बाद शिक्षा और सोशल मीडिया", शिक्षा संवाद पत्रिका
8. भार्गव, अनु एवं जायसवाल, दीप्ति (2020) – "सोशल मीडिया और युवा तनाव", मानसिक स्वास्थ्य शोधपत्र
9. द्विवेदी, आर. के. एवं अन्य (2023) – "उच्च शिक्षा में डिजिटल मंच", उच्च शिक्षा समीक्षा
10. कुमार, राहुल एवं सिंह, नीलम (2021) – "शहरी बनाम ग्रामीण सोशल मीडिया प्रयोग", डिजिटल भारत शोध–पत्र
11. कपलान, एंड्रियास एवं हेनलिन, माइकल (2010) – "सोशल मीडिया की परिभाषा", संचार अध्ययन
12. सुभ्रमण्यम, किरण एवं ग्रीनफील्ड, पेट्रीसिया (2008) – "किशोरों में सोशल नेटवर्किंग", युवा एवं मीडिया
13. टेसे, पौल (2013) – "शिक्षा में सोशल मीडिया", ई–लर्निंग समीक्षा
14. एलिसन, निकोल, स्टेनफील्ड, चार्ल्स (2007) – "सामाजिक पूंजी और फेसबुक", नेटवर्किंग अध्ययन
15. कैस्टेल्स, मैनुअल (2009) – "नेटवर्क समाज का उदय", वैश्विक समाजशास्त्र
16. आंद्रेसेन, सेसिल (2012) – "सोशल मीडिया व्यसन", मानसिक अध्ययन
17. स्टेटिस्टा रिपोर्ट (2022) – वैश्विक सोशल मीडिया डेटा
18. ग्लोबल वेब इंडेक्स (2023) – सोशल मीडिया उपयोग समय
19. बॉयड, डाना एवं एलिसन, निकोल (2007) – "नेटवर्क साइट्स की भूमिका", मीडिया समीक्षा
20. कीट्जमैन, जान एवं अन्य (2011) – "सोशल मीडिया कार्य प्रणाली", डिजिटल व्यवहार जर्नल

❑❑❑